12. कविता का कमाल

बहुत पुरानी बात है। मदन नाम का एक लड़का अपनी विधवा माँ के साथ गाँव में रहता था।

माँ - बेटा बहुत गरीब थे और उनके पास कमाई का कोई साधन नहीं था। फिर भी मदन दिनभर खेल-कूद में ही समय बिता देता था।

तंग आकर एक दिन उसकी माँ ने कहा, "अब मैं तुझे बैठाकर नहीं खिला सकती। जा, कुछ पैसे कमाकर ला।"

मदन घर से निकल पड़ा। वह गहरी सोच में डूबा था कि क्या करे? कैसे कमाए पैसे? अचानक उसे डुगडुगी पीटने की आवाज़ सुनाई दी।

"सुनो, सुनो, सुनो! राजदरबार में कवि सम्मेलन हो रहा है। सबसे अच्छी कविता सुनाने वाले को सौ अशर्फ़ियाँ इनाम में मिलेंगी।"

मदन चौकन्ना हो गया। 'सौ अशर्फ़ियाँ!' यह तो बना बनाया मौका था। मदन राजमहल की ओर चल पड़ा। चलते-चलते वह सोच रहा था कि उसने कभी कविता तो रची न थी। क्या सुनाएगा वहाँ पहुँचकर? लेकिन वह मस्त स्वभाव का था इसीलिए

अपनी गर्दन झटकते हुए उसने सोचा कि रास्ते में कुछ न कुछ सूझ ही जाएगा।

थोड़ी दूर पहुँचा तो एक कुत्ता दिखाई दिया। कुत्ता पंजों से ज़मीन खोदने में लगा था। मदन ने सोचा कि क्यों न अभी अपनी कविता शुरू की जाए।

बोला, "खुदुर-खुदुर का खोदत है?" यह पंक्ति उसे इतनी पसंद आई कि उसे दोहराते हुए चलता गया। वह एक तालाब के पास पहुँचा। वहाँ एक भैंस पानी पी रही थी।

मदन बोल पड़ा, "सुरुर-सुरुर का पीबत है?" मुस्कराते हुए वह आगे बढ़ा। इतने में एक पेड़ की डाल पर चिड़िया बैठी दिखाई पड़ी। वह पत्तियों के बीच से सिर निकालकर इधर-उधर झाँक रही थी।

देखते ही मदन के मुँह से निकल पड़ा, "ताक-झाँक का खोजत है?" तीनों पंक्तियों को रटते वह चलता गया। रटते-रटते उसे अपने आप एक और पंक्ति सूझ गई।

"हम जानत, का ढूँढ़त है!" अब तो सचमुच उसके मन में लड्डू फूटने लगे। कितने आराम से वह कविता रचता चला जा रहा था। तभी, 'सर्र' की आवाज़ सुनाई पड़ी। मदन ने चौंककर देखा कि एक साँप रेंगता जा रहा था।

तुरंत ही उसने आगे की पंक्तियाँ भी तैयार कर ली, "सरक-सरक कहाँ भागत है? जानत हो, हम देखत है? हमसे ना बच सकत है!"

अब सिर्फ़ एक पंक्ति बाकी रह गई थी। पर मदन निश्चिंत था कि वह पंक्ति भी चलते-चलते सूझ जाएगी।

राजधानी पहुँचा तो राजमहल का रास्ता ढूँढ़ने की समस्या खड़ी हुई। पास में खड़े एक आदमी से मदन ने पूछा, "भैया, आपको राजमहल का रास्ता मालूम है?"

"क्यों नहीं, क्यों नहीं, मुझे नहीं तो और किसे मालूम होगा?" उस आदमी ने उत्तर दिया।

मदन ने सोचा कि जरूर यह राजमहल का ही कोई कर्मचारी होगा। उसने पूछा, "आप कौन हैं, साहब?"

उत्तर मिला, "धन्नूशाह, भाई भन्नूशाह।"

मदन के दिमाग में एकाएक बिजली कौंधी। 'धन्नूशाह, भाई भन्नूशाह!' क्या बढ़िया शब्द थे। उसने इन्हीं शब्दों से अपनी कविता की अंतिम पंक्ति बना डाली।

वह खुशी-खुशी राजमहल पहुँचा। अंदर घुसने से पहले उसने अपनी कविता फिर दोहराई,

खुदुर-खुदुर का खोदत है?
सुरुर-सुरुर का पीबत है?
ताक-झाँक का खोजत है?
हम जानत, का ढूँढ़त है!
सरक-सरक कहाँ भागत है?
जानत हो, हम देखत है।
हमसे ना बच सकत है!
धन्नूशाह, भाई भन्नूशाह!

राजमहल में कवि-सम्मेलन शुरू हो चुका था। एक-एक करके कवि अपनी कविता सुना रहे थे।

बारी आने पर मदन ने भी अपनी कविता सुनाई। सुनने वाले एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। क्या अर्थ होगा इस विचित्र कविता का? पर किसी ने भी यह नहीं दिखाया कि उसे कविता समझ में नहीं आई। राजा के सामने वे मूर्ख नहीं दिखना चाहते थे।

उस रात राजा साहब की भी नींद गायब हो गई। मदन की कविता उनको सता रही थी। छज्जे पर खड़े होकर वे कविता दोहराने लगे। सोचा कि शायद इसी तरह इस पहेली को बूझ पाएँ।

संयोग से उसी समय कुछ चोर राजा के खजाने में सेंध लगा रहे थे। उनमें से

एक चोर वही धन्नूशाह था जिसने आज दिन में मदन को राजमहल का रास्ता बताया था।

ऊँची आवाज़ में राजा साहब बोलते जा रहे थे, "खदुरु-खदुरु का खोदत है?"

चोरों ने सुना तो चौंककर रुक गए। क्या किसी ने देख लिया था उन्हें? डर के मारे चोरों का गला सूखने लगा। अपने साथ ज़मीन को मुलायम करने के लिए पानी लाए थे। धन्नूशाह ने उठकर एक-आध घूँट निगला।

तभी राजा साहब बोले, "सुरुर-सुरुर का पीबत है?"

चोरों को काटो तो खून नहीं। सहमकर इधर-उधर झाँकने लगे कि कोई पकड़ने तो नहीं आ रहा है?

राजा ने फिर कहा, "ताक-झाँक का खोजत है? हम जानत, का ढूँढ़त है!"

यह सुनकर चोरों ने सोचा कि किसी तरह जान बचाकर भागा जाए। वे दबे पाँव बाहर सरकने लगे।

पर राजा की आवाज़ आई, "सरक-सरक कहाँ भागत है? जानत हो, हम देखत है? हमसे ना बच सकत है! धन्नूशाह, भाई धन्नूशाह!

धन्नूशाह की तो साँस वहीं रुक गई। उसने सोचा, 'अब कोई चारा नहीं। बस राजा साहब से दया की भीख माँग सकता हूँ।' दौड़कर उसने राजा साहब के पैर पकड़ लिए और विनती करने लगा, "क्षमा कर दीजिए महाराज! अब भूलकर भी ऐसा

काम नहीं करूँगा। वैसे हमने कुछ लिया ही नहीं। आपका खज़ाना सही सलामत है।"

राजा साहब हक्के-बक्के रह गए। उन्होंने तुरंत सिपाहियों को बुलाकर छानबीन करवाई तो पता चला कि उनका खज़ाना लुटते-लुटते बचा था।

मदन को बुलवाया गया। राजा ने शाबाशी देकर कहा, "यह सब तुम्हारी कविता का कमाल है।"

मदन को सोने-चाँदी से मालामाल कर दिया गया। वह खुशी-खुशी अपने गाँव लौट आया। अब उसके पास अपने और अपनी माँ के रहने के लिए काफ़ी धन था।

शब्दार्थ

डुगडुगी पीटना	= (ढोल-बाजे के साथ) प्रचार करना, सूचना देना
निश्चिंत	= चिंता से मुक्त
मन में लड्डू फूटना	= मन ही मन खुश होना।
मालामाल कर देना	= काफी धन देना
हक्का-बक्का हो जाना	= हैरान रह जाना
अशर्फ़ियाँ	= पुराने जमाने में प्रचलित सोने-चाँदी के सिक्के
चौकन्ना	= सावधान

अभ्यास

बातचीत के लिए

1. राजमहल क्या है? इसमें कौन-कौन लोग रहते होंगे?
2. सुखी रहने के लिए मदन एवं उसकी माँ ने सोने-चाँदी से क्या-क्या खरीदा होगा?
3. राजा का खजाना लुटने से बच गया, कैसे?
4. किन-किन अवसरों पर डुगडुगी पीटी जाती होगी, इनकी सूची बनाइए।
5. आप किन-किन कामों के लिए डुगडुगी पीटेंगे? इनकी भी सूची बनाइए।
6. किसी बात को लोगों तक पहुँचाने के और कौन-से तरीके हो सकते हैं?

पाठ से

1. माँ ने तंग आकर मदन से क्या कहा?
2. मदन को कविता रचने की प्रेरणा किन-किन चीजों से मिली?
3. धन्नूशाह को महल का रास्ता इतनी अच्छी तरह क्यों मालूम था?
4. मदन को कविता रचने की आवश्यकता क्यों पड़ी?
5. राजा ने मदन को शाबासी व इनाम क्यों दिया?
6. **किसने, किससे कहा?**

(क) अब मैं तुझे बैठाकर नहीं खिला सकती। जा, कुछ पैसे कमाकर ला।

(ख) राजदरबार में कवि सम्मेलन हो रहा है। सबसे अच्छी कविता सुनाने वाले को सौ अशर्फ़ियाँ इनाम में मिलेगी।

(ग) भैया, आपको राजमहल का रास्ता मालूम है?

(घ) "क्षमा कर दीजिए महाराज!"

(ङ) "यह सब तुम्हारी कविता का कमाल है"।

---

(7) पाठ के आधार पर सही (✓) और गलत (X) का निशान लगाइए।

(क) मदन अपनी विधवा माँ के साथ गाँव में रहता था। ☐
(ख) राजमहल में एक संगीत प्रतियोगिता का आयोजन हो रहा था। ☐
(ग) मदन चलते-चलते एक नदी के पास पहुँचा। ☐
(घ) मदन को राजा ने सोने-चाँदी से मालामाल कर दिया। ☐

आपकी समझ से

1. (क) ज्यादा टी॰ वी॰ देखने के कारण तंग आ कर आपकी माँ या पिताजी आपको क्या कहते हैं?

   (ख) मदन की कविता को सभी लोग विचित्र क्यों मान रहे थे?

2. अशर्फ़ियाँ क्या होती हैं? अगर कोई आपको सौ अशर्फ़ियाँ दे तो आप उनका क्या करेंगे?

भाषा के नियम

1. 'रटते-रटते' उसे अपने आप एक पंक्ति सूझ गई। इस वाक्य में 'रटते' शब्द का दो बार प्रयोग हुआ है। इस तरह के अन्य शब्द पाठ से ढूँढ़कर लिखिए –

   ---------- ---------- ---------- ---------- ----------

2. **इन मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करते हुए अर्थ बताइए–**

   (क) काटो तो खून नहीं –

   (ख) हक्का-बक्का रह जाना–

   (ग) दया की भीख माँगना–

   (घ) मालामाल कर देना–

   (ङ) मन में लड्डू फूटना–

   (च) काम तमाम कर देना–

3. पाठ में से वर्तमानकाल, भूतकाल और भविष्यत्काल वाले तीन-तीन वाक्य छाँटकर लिखिए –

वर्तमानकाल

(i) ----------

(ii) ----------

(iii) ----------

भूतकाल

(i) ----------

(ii) ----------

(iii) ----------

भविष्यत्काल

(i) ----------

(ii) ----------

(iii) ----------

4. पाठ में कविता को 'विचित्र' कहा गया है। आप कविता के लिए किन विशेषण शब्दों का प्रयोग करेंगे?

....

5. इनके लिए भी दो-दो विशेषण शब्द सुझाइए–

(i) माँ – ---------- ----------

(ii) महल – ---------- ----------

(iii) मदन – ---------- ----------

विराम-चिह्न

नीचे दिए गए वाक्यों में सही विराम-चिह्न लगाइए –

(क) मदन ने कहा महाराज मैंने बहुत अच्छी कविता बनाई है

(ख) चोरों ने सारा धन चुरा लिया

(ग) कहाँ चल दिए

(घ) वाप रे इतना पैसा कहाँ से आया

(ङ) क्या सुरुर सुरुर बोल रहे हो

संवाद और अभिनय

1. 'कविता का कमाल' कहानी का कक्षा या विद्यालय में मंचन कीजिए।
2. आप इस नाटक में किस पात्र की भूमिका निभाना चाहेंगे और क्यों?
3. मंचन के लिए आपको किन-किन पात्रों और सामानों की ज़रूरत पड़ेगी? एक सूची बनाइए।

आपकी कल्पना और कलम

1. अगर मदन यह कहानी सुनाता तो कैसे सुनाता ? मदन की जगह स्वयं को रखते हुए 'कविता का कमाल' कहानी सुनाइए और लिखिए।
2. कहानी का यह शीर्षक किस आधार पर रखा गया होगा?
3. आप कहानी के लिए कोई दो मज़ेदार शीर्षक सुझाइए। साथ में यह भी बताइए कि आपने ये शीर्षक क्यों रखे?
4. **पाठ में से कोई तीन सवाल बनाइए–**

(क) जिनके उत्तर हाँ / नहीं में होगा ।

(ख) जिनमें क्यों का जवाब देना होगा ।

(ग) जिनमें क्या का जवाब देना होगा ।

बूझो तो जाने

दीदी की शादी में आए,
सजधज सोलह बाराती,
बाराती जन जो भी आए,
उनको गुझिया ही भाती।।
चार–चार तो बड़ों–बड़ों को
मुनिया को दो दी जातीं।
आठ बड़े तब शेष लड़कियाँ,
कुल कितनी गुझिया खातीं।।